International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 6.924 Volume 9, Issue 09, September 2022
Website- www.aarf.asia, Email : editoraarf@gmail.com

भारत में महिला सशक्तिकरण एवं नारीवादी संघर्ष की चुनौतियाँ : एक अध्ययन

डॉ० वंशगोपाल

असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान

गोस्वामी तुलसीदास राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कर्वी, चित्रकूट

सारांश - किसी भी देश का विकास महिलाओं की प्रस्थिति पर निर्भर करता है। अतीत से ही महिलाओ का समाज में सर्वोपरि स्थान रहा है। "यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते रमन्ते तत्र देवता" हमारा आदर्श रहा है। परन्तु महिलाएं पुरुष प्रधान समाज में शोषण का शिकार होती रही है जो अनवरत् जारी है। विश्व की आधीआबादी होने के बावजूद उन्हें अधिकारों से वंचित रखा गया। इसी का परिणाम है कि पश्चिमी राष्ट्रों में आज नारीवाद सक्रिय अवस्था में है, इसने नवीन संकल्पनाओं को विकसित कर महिलाओ पर हो रहे बहुआयामी शोषण की चेतना जागृत करके संघर्ष को दृढता प्रदान की है।यह समता एवं न्यायपूर्ण समाज की भावना को अन्र्तनिहित किये, प्रगतिशील संकल्पना है, जो नारियोंके ऊपर पितृतंत्रीय शोषण मुक्ति, उनकी गरिमा तथा विभिन्न अधिकारों के लिये संघर्षरत है। इनका मानना है कि समाज के न्यायपूर्ण विकास का आधार महिलाओं की प्रस्थिति (Status) **है, जो पितृसत्ता के अधिपत्य के कारण उपेक्षित एवं दमित है।**

शब्दकुंजी- : **नारीवादी आंदोलन ,महिला सशक्तिकरण, वैश्विकरण, अधिकार।**

प्रस्तावना

आज भारत में बहुसंख्यक स्त्रियाँ पितृतंत्र या पुरुष समाज की सत्ता के अधीन है, जिसने शक्ति राजनीति के बल पर स्त्रियों के जीवन के प्रत्येक पक्षों उत्पादन, श्रम शक्ति, आर्थिक संसाधनों, प्रजननता, गतिशीलता, परिवार, शैक्षिक व्यवस्था, सरकृति आदि को अधिपत्य में रखकर उससे आर्थिक, सामाजिक, यौनिक एवं

मनोवैज्ञानिक लाभ प्राप्त कर रहे हैं। इसी कारन नारीवाद नारी की स्थिति, परिवार एवं समाज में उसकी भूमिका और अधिकारों की यह माँग करती है कि महिलाओं के जीवन में शोषण के सभी क्षेत्रों तथा व्यक्तिगत विषयो को राजनीति के दायरे में लाकर पुरूष शोषण, शक्ति एवं अधिपत्य को चुनौती दी जानी चाहिए, क्योंकि इनसे स्त्रियों का शोषण सर्वाधिक होता है।

अध्ययन के उद्देश्य -

1. **महिला सशक्तिकरण एवं भारत में नारीवादी संघर्ष का विश्लेषण करना ।**
2. **परंपरागत समाज तथा वैश्विकरण में महिलाओं की स्थिति का मूल्यांकन करना ।**
3. **महिला सशक्तिकरण के लिए अधिकारों का विश्लेषण करना**

साहित्य समीक्षा

1. **प्रारंभिक चरण**: **सामाजिक सुधार और स्त्री प्रश्न** (19**वीं–प्रारंभिक** 20**वीं सदी**) **भारतीय नारीवादी चिंतन की जड़ें सामाजिक सुधार आंदोलनों में देखी जाती हैं।राजा राम मोहन राय ने सती प्रथा के उन्मूलन के लिए संघर्ष किया, ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने विधवा विवाह को वैध कराने में योगदान दिया। पंडिता रमाबाई की पुस्तक** "The High-Caste Hindu Woman" (1887) **स्त्री उत्पीड़न का प्रारंभिक विश्लेषण प्रस्तुत करती है।इस दौर का साहित्य मुख्यतः सुधारवादी था, जिसमें स्त्री को "सुधार की आवश्यकता वाली" इकाई के रूप में देखा गया।**
2. 2. **राष्ट्रीय आंदोलन और स्त्री भागीदारी** (1920–1947), **स्वतंत्रता संग्राम के दौरान नारीवादी चेतना ने नया आयाम प्राप्त किया। सरोजिनी नायडू और कस्तूरबा गांधी जैसी महिलाओं ने सार्वजनिक जीवन में सक्रिय भूमिका निभाई। महात्मा गांधी ने महिलाओं को राजनीतिक संघर्ष में शामिल किया।**
3. **स्वतंत्रता के बाद का चरण** (1950–1970) **इस अवधि में संवैधानिक समानता के बावजूद वास्तविक असमानता पर ध्यान केंद्रित हुआ।भारत सरकार की रिपोर्ट** "Towards Equality" (1974) **एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुई। शिक्षा, रोजगार और राजनीतिक प्रतिनिधित्व में असमानता उजागर हुई। नारीवादी अध्ययन को अकादमिक मान्यता मिलने लगी।**
4. **आधुनिक नारीवादी आंदोलन** (1970–1990) **इस दौर में नारीवादी संघर्ष अधिक संगठित और वैचारिक हुआ। कुमकुम संगारी एवं सुधेश वैद** — "Recasting Women" (1989) **उमा चक्रवर्ती** —

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

महिला अध्ययन के विकास में योगदान मुख्य मुद्दे: दहेज हत्या, बलात्कार कानून, कार्यस्थल पर शोषण, यह दौर "समानता" से आगे बढ़कर "न्याय" और "अधिकार" की मांग करता है।

5. **समकालीन नारीवाद** (1990 **के बाद**) **उदारीकरण और वैश्वीकरण के बाद नारीवादी विमर्श अधिक विविध हुआ।**
6. **निवेदिता मेनन** — "Seeing Like a Feminist" (2012) **नारीवाद की विभिन्न मुद्दो पर विचार विमर्श किया ।**

"नारीवादी लेखिका मेरी वाल्स्टन क्राफ्ट" के अनुसार मैं यह नहीं कहती कि पुरूष के बदले अब स्त्री का वर्चस्व पुरुष पर स्थापित होना चाहिए, जरूरत इस बात की है कि स्त्री को स्वयं अपने बारे में सोचने-समझने का अधिकार मिले नारीवादी विचारको का मानना है कि पितृसत्ता द्वारा निर्मित संरचनाओं ने नारियों को सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में दोयम स्थिति में लाकर परिवार से लेकर सत्ता तक पुरुष प्रधानता को कायम करके वैधता प्रदान किये हुए है अत: इसे समाप्त किया जाना चाहिए। आज नारीवाद ने स्त्री शोषण की चेतना को परिवार तक पहुंचाकर पितृसत्ता एवं पुरूष प्राधान्य के वैधता मूलक मूल्यों, सिद्धान्तों को चुनौती देते हुए न्याय, समानता, अधिकार एवं राजनीतिक दायित्व को पुर्नपरिभाषित करने की आवश्यकता सिद्ध कर दी है।

संयुक्त राष्ट्र संघ की एक रिपोर्ट के अनुसार महिलाएं विश्व की कुल जनसंख्या की आधी है तथा वे कुल कार्य समय का दो तिहायी हिस्सा सम्पादित करती हैं लेकिन विश्व की आय का दसवां हिस्सा ही प्राप्त करती हैं तथा विश्व की कुल सम्पत्ति के 100**वें भाग से कम की स्वामिनी है।**

भारत में नारीवादी आन्दोलन महिलाओं के राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक अधिकारों, न्याय तथा समान अवसरों के लिए संघर्ष से प्रारम्भ होकर आज संक्रमण की स्थिति में है, क्योंकि यहाँ परम्परागत समाज, कल्याणकारी राज्य तथा वैश्वीकरण की प्रेरक शक्तियाँ एक साथ कार्य कर रही हैं।

हालांकि संविधान द्वारा महिलाओं की स्थिति सुधार की दशा में कई महत्वपूर्ण कदम उठाएं गये हैं। जैसे महिलाओं के लिए दहेज प्रतिषेध अधिनियम 1961, **भरण पोषण सम्बन्धी कानून, हिन्दू उत्तराधिकार**

अधिनियम 1956, **मातृत्व लाभ-अधिनियम** 1961, **हिन्दू अवयस्कता एवं संरक्षकता अधिनियम** 1956, **विधवा**, **पुनर्विवाह अधिनियम** 1956, **सती निरोधक कानून** 1987, **समान पारिश्रमिक अधिनियम**, **सिविल अधिकार संरक्षण अधिनियम**, **कारागार अधिनियम**, **पंचायती राजअधिनियम**, **परिवार न्यायालय अधिनियम**, **मुस्लिम विवाह विच्छेद अधिनियम** 1939, **वाल विवाह अवरोध अधिनियम** 1929 **और अनैतिक व्यापार दमन** 1956 **कानून आदि बनाए गए इसके साथ-साथ संवैधानिक प्रावधानों में महिलाओं के अधिकारों हेतु विभिन्न अनुच्छेदों में व्यवस्था की गयी है जिनमें अनुच्छेद** 14, 15, 16, 17, 18 **धर्म**, **मूलवंश**, **जाति**, **लिंग या जन्मस्थान के आधार पर व्यक्तियों में विभेद**, **नौकरी आदि के मामलों में स्त्री पुरुषों में किसी प्रकार का कोई भेद नहीं किया जायेगा।**

किंतु परम्परागत भारतीय समाज की प्रेरक शक्तिया धर्म, जाति, अंधविश्वास, स्त्रियों की पुरुषों पर सामाजिक एवं आर्थिक निर्भरता के कारण यहाँ पितृसत्ता का रूप सदैव दबंग, शोषणकारी तथा नारी के प्रत्येक क्षेत्र में अभी भी पुरुषों के नियंत्रण युक्त है। यहाँ महिलाओं में परम्परागत समाज के वैधतामूलक मूल्य परिवार, सामाजिक, धार्मिक संस्थाओं तथा अन्य माध्यमों से आत्मसात कराये गये हैं, जिस कारण बहुसंख्यक नारियों को पितृतंत्रीय प्रभुत्व एवं अन्याय की या वो चेतना ही नहीं है और या फिर वे इसे परम्परा, संस्कृति, धर्म अथवा नियति के नाम पर स्वीकार किये हुये हैं। परिणामतः पितृसत्तात्मक व्यवस्था स्त्रियों के जीवन के सभी पक्षों पर प्रभावपूर्ण अधिपत्य एवं वैधता प्राप्त किये हुये है। अतः भारत में नारीवादी संघर्ष की दिशा में परम्परागत समाज बहुत बड़ी बाधा के रूप सामने है।

हालांकि कल्याणकारी राज्य तथा लोकतंत्र द्वारा सभी नागरिकों के लिये न्याय, स्वतंत्रता, समानता, आर्थिक, राजनीतिक अधिकारों की प्राप्ति एवं मानवीय गरिमा के आदर्श रखे गये हैं, जो एक समतापूर्ण समाज के निर्माण की कल्पना करता है किन्तु अत्यधिक जनसंख्या, कृषि प्रधान समाज, अशिक्षा, जातिवाद, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार आदि कारणों से कल्याणकारी राज्य इन समस्याओं के समाधान तक ही केन्द्रित हो

जाते हैं। परिणामस्वरूप कल्याणकारी राज्य भी मूल नारीवादी मुद्दे से अछूते रह जाते हैं और स्त्रियों का पितृतन्त्र द्वारा कल्याणकारी राज्य के भीतर ही शोषण जारी रहता है।

वर्ष 1990 **के पश्चात 'वैश्वीकरण' के फलस्वरूप सामाजिक सम्बन्धों के विकास भारतीय महिलाओं में नवीन मूल्यों एवं चेतना, रूढ़ियों से मुक्ति तथा व्यवसायिकता का विकास हुआ है, जिससे उन्हें नवीन क्षितिज प्राप्त हुए है, किन्तु संयुक्त से एकाकी परिवार की ओर झुकाय, पारिवारिक विघटन, महिलाओं को प्रदर्शन वस्तु के रूप में भूमिका का विकास, कार्यरत दम्पत्तियों की समस्याएं आदि भी दिखाई दे रही है।**

वास्तव में वैश्वीकरण ने उपभोक्तावादी संस्कृति को बढ़ावा दिया है, जिसने भारत जैसे विकासशील राष्ट्रों में जीवन की भौतिक सुख सुविधाओं को गुणात्मक रूप से बढ़ाते हुए ऐसी स्थितियों को जन्म दिया है, जहाँ स्त्रियों को उनके ऊपर हो रहे पितृतन्त्रीय शोषण की चेतना ही लुप्त हो गई है और वे उपभोक्तावाद की ओर तीव्रतम गति से अग्रसर हैं, जिससे नारीवादी आन्दोलन की दिशा एवं गति प्रभावित हुई है।

अतः सार रूप में यह कह सकते हैं कि भारत महिला सशक्तिकरण और नारीवादी को परम्परागत समाज के साथ-साथ कल्याणकारी राज्य और वैश्वीकरण से भी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जोकि विकसित देशों की परिस्थितियों से भिन्न है।

संदर्भ सूची-

1. **डॉ० वीरेन्द्र कुमार भारतीय संस्कृति।**
2. **पुष्पेश पंत** 21**वीं शताब्दी में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध ।**
3. **रोमी शर्मा भारतीय महिलाएं नई दिशाएं, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, नई दिल्ली** 2002
4. **समसामयिक घटनाचक्र नवम्बर**, 2014
5. **वर्ल्ड फोकस जुलाई**, 2014
6. **प्रो० एम.एल. गुप्ता एवं डॉ० डी०डी० शर्मा ग्रामीण तथा नगरीय समाजशास्त्र सा०भ०पब्लि० आगरा** 2006
7. **पी०सी० पाण्डेयभारत का सामाजिक इतिहास।**
8. **प्रो० ए०आर०एन० श्रीवास्तव भारतीय सामाजिक समस्यायें** 2007
9. **डॉ० एस०एम० सईद भारतीय राजनीतिक व्यवस्था ।**

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

10. **नदीम हसनैन समकालीन भारतीय समाज एक समाजशास्त्रीय परिदृश्य**, **लखनऊ** 2004

11. A.S. Altekar, "The position of women in Hindu Civilization, 1987"

12. O.P. Gaba - Introduction to political theory.

13. R.C. Vermani International Relations.

© **Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.